चतुर्थ अध्याय

'अग्नि-लीक' का भाषा सौंदर्य

चतुर्थ अध्याय
'अग्नि-लीक' का भाषा सौंदर्य

4.0 भूमिका -

मनुष्य के मन की सहज प्रवृत्ति है - अभिव्यक्ति। मनुष्य इस वस्तुजगत में जो कुछ भी देखता है उसके मन में उसी के अनुसार भाव निर्माण होते हैं। मनुष्य अपने भावों को किसी न किसी माध्यम से प्रकट करना चाहता है। कवि लोग अपनी अभिव्यक्ति के लिए कई माध्यमों का सहारा लेते हैं। किसी भी कृति में उसके कथ्य या विषय के साथ ही उसके रूप और शिल्प को भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहता हैं। भावपक्ष और कलापक्ष के योग्य संयोग से ही रचना का सौंदर्य अधिक बढ़ता है। काव्य के स्वरूप परिवर्तन के साथ ही अभिव्यंजना की पध्दति भी बदल जाती है। खण्डकाव्य की दृष्टि से शिल्पविधान में भाषा, प्रतीक योजना, अलंकार योजना, छंद योजना इन बातों का विचार किया जाता है। खण्डकाव्य की भाषा सरल, प्रवाही, अर्थगर्भ और प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। खण्डकाव्य का विषय ऐतिहासिक, पौराणिक या काल्पनिक और गंभीर होता है। कवि इन विषयों के आधार पर आधुनिक समस्याओं को स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों की योजना करता है। काव्य की अभिव्यक्ति शैली स्पष्ट तथा प्रभावशाली होने के लिए वह उचित अलंकारों का प्रयोग करता है। साथ ही कथा में प्रभावात्मकता तथा सुसम्बद्धता लाने के लिए छंद तथा सर्गो की योजना करता हैं। इन सभी तत्त्वों के उचित संयोग से ही खंडकाव्य की अभिव्यक्ति सशक्त बनती है। इन्हीं तत्त्वों के आधार पर हम प्रस्तुत अध्याय में भारत जी के 'अग्नि-लीक' की भाषा सौंदर्य को देखेंगे।

4.1 भाषा -

भाषा अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा ही वह साधन है जिसके द्वारा कवि अपने विचारों और भावों को अपने पाठकों के पास पहुँचाता है। खंडकाव्य में भी भाषा तत्त्व महत्त्वपूर्ण है। भाषा के लिए यह बात आवश्यक है कि वह भावानुकूल हो। गंभीर विचारों के लिए भाषा का रूप गंभीर होना चाहिए तथा सीधे-सीधे स्पष्ट विचारों के लिए सरल और व्यावहारिक भाषा प्रयोग में लानी चाहिए। जिसका प्रयोग भारत जी ने 'अग्नि-लीक' में किया है।

सुंदर शैली के लिए सबसे आवश्यक बात शब्दों के उचित प्रयोग और वाक्य विन्यास के गठन की है। दूसरी आवश्यक बात यह कि वह व्याकरण की दृष्टि से शुध्द परिष्कृत और परिमार्जित होनी चाहिए। 'अग्नि-लीक' की भाषा इन सारे तत्त्वों से युक्त है। यदि भाषा में व्याकरण की अशुध्दिया होगी, शब्दों का गलत प्रयोग होगा, वाक्यरचना अव्यवस्थित होगी तो ऐसी भाषा से काव्य प्रभावात्मक नहीं होगा। अतएव काव्य में भाषा की कलात्मकता, आकर्षण, संपन्नता, प्रभाविष्णुता, संप्रेषणीयता एवं उसके भाव गांभीर्य की शक्ति भाषा द्वारा ही सिद्ध होती है।

इस दृष्टि से देखा जाय तो भारत जी की काव्य कृति की (अग्नि-लीक) भाषा सौंदर्य को देखते समय हमें सर्व प्रथम उनकी शब्द योजना का ही परिचय देना उचित होगा। भारत जी की काव्यभाषा सहज, सरल है। 'अग्नि-लीक' खंडकाव्य मिथकीय है जो तत्सम भाषा की माँग करते है। भाषा में संयम है। 'अग्नि-लीक' की भाषा यद्यपि सरल, सहज और बोधगम्य है तथा गद्य के अति निकट है। ऐसा लगता है कि भारत जी ने गद्य के टुकडों को ही तराशकर, काट-छांटकर इन्हें अपने विचारानुसार काव्य का आकार दिया है। इस पध्दति से भाषा में कोमलता तो आयी है किन्तु उसमें आद्यन्त एक ठण्डापन जारी है, उसमें आवेग और क्षिप्रता नहीं है।

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य को नाट्य काव्य या दृश्यकाव्य भी कहा है किन्तु इसमें नाटयानुभूति प्रखर रूप में सामने नहीं आ पाती इसीलिए स्वयं भारत जी ने इसे खण्डकाव्य कहा है। 'अग्नि-लीक' में कुछ शब्द है जैसे ताबडतोब, कलेजे पर पत्थर रखना, पूरे दिन चढना, पाँव भारी होना, वे दिन लद गये, अंधेरे में रखना, प्राणों का पत्थर होना, कान बजाना, आँख गड़ाना, आँख- मिचौनी खेलना आदि मुहावरों की लाक्षणिकता दृश्यात्मकता को बल देकर नाटयानुभूति को गर्म करती है। 'अग्नि-लीक' में सीता का मोहभंग जनित आवेग उष्मारहित एवं मन्थर है। अन्त में ही सही भारत जी ने राम को हारते हुए चित्रित किया है।

जिस प्रकार आज का कवि वस्तुगत यथार्थ के प्रति अपनी संपृक्ति दिखाता है, उसी प्रकार वह भाषा प्रयोग में भी यथार्थ की प्रतिष्ठा करता दिखायी देता है। यथार्थ की भाषा और कुछ न होकर बोलचाल या जन-व्यवहार में प्रयुक्त होनेवाली

भाषा ही हो सकती है। काव्य की भाषा को 'यथार्थ की भाषा' बताते हुए भारतभूषण अग्रवाल जी ने उसे सहज तथा दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होनेवाली भाषा ही स्वीकार किया है। काव्यभाषा की यथार्थता की चर्चा करते हुए, उसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है - "उसे (कवि को) प्रचलित भाषा में ही तथा अर्थ भरना है, नयी अभिव्यक्ति का माध्यम पाना है। यही नहीं, उसके आसपास एक विदेशी भाषा का ऐसा धडल्ले से व्यवहार होता है कि सही भाषाभिव्यक्ति के लिए उसके शब्दों का सम्पूर्ण बहिष्कार करने की स्थिति में वह नहीं है। परिशुध्दतावादी उसे चाहे कितना ही क्यों न कोसे, दैनंदिन बोलचाल में प्रचलित इन अँगरेजी शब्दों के स्थान पर हिन्दी के शब्द बैठना कृत्रिम ही कहा जाएगा और ऐसे शब्द भाव की व्यंजना नहीं कर सकेंगे। यथार्थ की भूमि पर जो काव्य खडा है उसका माध्यम यथार्थ भाषा ही हो सकती है - शब्दकोश की भाषा नहीं।"[1] एक तरह से देखा जाय तो यह विचार भारतभूषण का ही नहीं अपितु समूचे आलोच्य युग के कवियों का है।

यह सत्य है कि आज का कवि नवीन शब्दों का गठन करता है, उसमें नये अर्थों का सन्निवेश करता है, फिर भी वह प्रचलन के शब्दों को छोडता नहीं वरन् भावों की सहजता एवं संप्रेषणीयता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को यथास्थान जरूरत के मुताबिक प्रयुक्त भी करता है। नवीन शब्दों के गठन में भी वह इस बात के प्रति हमेशा सचेष्ट रहता है कि कहीं बेतुके, अनगठ एवं हास्यास्पद प्रतीत होनेवाले शब्दों की योजना न होने पाए। वह लोक में प्रचलित सामान्य शब्दों के ही नहीं अपितु लोक-मुहावरों एवं कहावतों के भी प्रयोग पर बल देता है, क्योंकि उसके विचार से लोक-कहावते एवं मुहावरे सामान्य जन-जीवन के बीच प्रचलित होते हैं अतः वे जन-सामान्य के लिए अधिक ग्राहय हो सकते हैं, साथ ही उनके माध्यम से भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति भी स्पष्ट एवं सरल ढंग से की जा सकती है। सत्य तो यह है कि आधुनिक युग की कविता में मुहावरों आदि के प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन के लिए नहीं अपितु सार्थक उद्देश्य की पूर्ति हेतु किये गये हैं।

'अग्नि-लीक' खंडकाव्य की भाषा हम देखे तो यह ज्ञात होता है कि

1. डॉ.उपाध्याय कौशलनाथ, छायावादोत्तर हिन्दी काव्य : बदलते मानदण्ड एवं स्वरूप, पृ.236

LIBRARY

कवि अग्रवाल जी की भाषा में सहजता से खंडकाव्य के तत्त्वों का निरूपण हुआ है। भावों तथा अनुभूति की कोमलता, सहजता का ज्ञान अग्रवाल जी द्वारा प्रयुक्त शब्दावली से होता है इस खंडकाव्य में संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी ऐसे एक भी भाषा का प्रयोग नहीं हुआ है। एक जगह पर संस्कृत का श्लोक अवश्य लिया गया है। किन्तु पूरे खंडकाव्य में संस्कृत का प्रयोग कतई दिखाई नहीं देता। प्रस्तुत खण्डकाव्य में बोलचाल की सहज, सरल स्पष्ट भाषा देखने को मिलती है।

कवि भारत जी ने 'अग्नि-लीक' में नयी भाषा का प्रयोग किया है। भाषा में व्यंग्यात्मकता है, विरोध है मुहावरों का प्रयोग किया गया है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह कि 'अग्नि-लीक' की भाषा गद्य के अति निकट है। 'अग्नि-लीक' की भाषा संवादात्मक है प्रश्नात्मक है। भारत जी ने 'अग्नि-लीक' को भावपूर्ण एवं अर्थपूर्ण गरिमा में प्रस्तुत किया है। फिर भी कुल मिलाकर भाषा सहज और सरल दिखाई देती है। भारत जी ने 'अग्नि-लीक' द्वारा आधुनिक राजनीति का यथार्थ दर्शन कराया है तथा पुरानी रूढ़ि परंपरा का विरोध करते हुए आधुनिक स्त्री के मनोभावों को चित्रित किया है। हम 'अग्नि-लीक' की विशेषता को देखते हैं -

4.1.1 सरलीकरण -

यथार्थ के जीवन को वाणी देनेवाले इस खंडकाव्य में जो शब्द आये हैं वे बहुत ही सरल और बोलचाल के हैं। शायद कवि का आग्रह इस बात पर विशेष है कि शब्द-जीवन के हों। वास्तविकता यही है कि काव्य की भाषा जन भाषा के निकट हैं। उसमें सामाजिक होने का गुण भी दिखाई देता है। कवि ने बोलचाल वाली भाषा रूप को अपनाकर अभिव्यक्ति को सँवारा है। बोलचाल और सरलता लोन की दृष्टि से दैनिक व्यवहार की भाषा को विशेष स्थान दिया है। कवि की निम्न पंक्तियाँ सामाजिक जीवन दर्शन का परिचय देती है -

''क्या प्रयोजन है इस हलचल का,
इस कोलाहल का। इस समारोह का,
धन, जन और बल का ऐसा घोर अपव्यय -
जब सारी भूमि अभावों से ग्रस्त है,

पीडा से त्रस्त है।"[1]

× × × × × × ×

"क्या लक्ष्य है इसका?
मेरे प्रभु,
क्या तुम अब भी नहीं जान पाये;
तुम्हें दिग्विजयी नहीं, आत्मजयी बनना है
तुम्हें राजा महाराजों को नहीं
अपने ही अधीन
क्षुद्र-दृष्टि और लोलुप पण्डितों और वानरों को
वश में करना है?"[2]

उपर्युक्त पक्तियों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि राम दिग्विजयी नहीं बल्कि आत्मजयी बनना चाहते हैं। कवि ने विजय-यात्रा और प्रजा की हाहाकार को आमने-सामने रखकर वैषम्य को व्यंजित किया है जो बहुत ही मार्मिक और ह्दय को हिला देनेवाली है जो कवि ने इन पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया है -

"क्या तुम्हें
इस तुलुम विजय-निनाद के नीचे कराहता
अपनी प्रजा का हाहाकार सुनायी नहीं देता?
क्या तुम जानते हो
कि तुम अश्वमेध के नाम पर
पाप कर रहे हो?"[3]

4.1.2 प्रवाहशीलता -

प्रवाहशीलता भाषा का आवश्यक गुण होता है। नयी कविता में आई प्रवाहशीलता का रहस्य सीधी, स्पष्ट शब्दावली का प्रयोग है। भारत जी ने शब्दों की

1. अग्रवाल भारतभूषण, 'अग्नि-लीक', पृ.32
2. वही, पृ.33
3. वही, पृ.33

सादगी से भावों की गुरूता को रूपायित किया है। "'अग्नि-लीक' की पंक्तियाँ भाव के साथ-साथ आगे बढ़ती गयी है। 'प्रवाहशीलता नयी कविता के उन सभी कवियों में है जो कि संतुलित और सरल भाषा का प्रयोग करते है।'[1] भारत जी ने 'अग्नि-लीक' में सरल और स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में संयम है। 'यह गुण जगदीश गुप्त, मुक्तिबोध, अज्ञेय, सर्वेश्वर और गिरिजाकुमार में सबसे अधिक है।'"[2]

'अग्नि-लीक' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है -

(1) "कुछ दुःख ऐसे भी होते हैं।
जिन्हें आदमी सिर्फ भोगता है -
वह उन्हें रचता नहीं, चाहता भी नहीं,
और उन्हें मिटाना भी उसके बस में नहीं होता
क्योंकि जो बीत चुका है
वह अन-बीता कैसे हो सकता है?"[2]

× × × × × × × × ×

(2) "पेडों के फल खाकर
नदियों और नालों का जल पीकर
जिस-तिस के आगे हाथ पसारकर
लम्बे दिन और सूनी रातों में कलपती-बिलखती फिरी
और अन्त में उन्हें पालने में असमर्थ होकर
उनकी माँ कहलाने का गर्व और मोह छोडकर
उन्हीं की देखभाल के लिए
मैं, उनकी माँ,
इस आश्रम में टहलानी बनकर रही हूँ।"[3]

1. डॉ.शर्मा हरिचरण, नयी कविता का मूल्यांकन : परंपरा और प्रगति की भूमिका पर,पृ.375
2. अग्रवाल भारतभूषण, 'अग्नि-लीक',पृ.13
3. वही, पृ.43

उपर्युक्त दि गई पंक्तियाँ भाव के साथ-साथ आगे बढ़ती हुई दिखाई देती है। भाषा में संतुलन और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

4.1.3 प्रेषणीयता -

भारत जी ने शब्दों में नया अर्थ भर दिया है। उन्होंने छोटे-छोटे दिखनेवाले शब्दों को गरिमा से भर दिया है। कवि ने जीवन के कठोर, यथार्थ, संघर्ष और वास्तविक प्रवाह में अभिषिक्त करके शब्दों को प्रस्तुत किया है। इसके मूल में भाव को पाठक तक अक्षुण्ण रूप में पहुँचाने या प्रेषित करने की प्रवृत्ति निहित है। 'अग्नि-लीक' की इन पंक्तियों को देखा जा सकता है -

> ''घर से छूटी नारी के जीवन में
> ऐसा क्या हो सकता है जो जानने योग्य हो
> और जाना न जा चुका हो।''[1]

इन पंक्तियों द्वारा घर से बेघर हो गयी स्त्री के मन के भाव व्यंजित होते है।

> ''शोभा, शोभा?
> हाँ, नारी तो शोभा ही है
> उग्रसे तो शोभा ही माँगी जाती है
> गुरूदेव,
> क्या इस रामराज्य में सत्य का कोई स्थान नहीं
> सब कुछ शोभा के ही लिए है?''[2]

आज भी समाज में स्त्री को सिर्फ शोभा मात्र समझा जाता है। भारत जी ने 'अग्नि-लीक' द्वारा स्त्री के अंतर्गत भावों को व्यंजित किया है। विशेषता इस बात में है कि साधारण और दैनिक जीवन के शब्द भी कवि के हाथों पडकर व्यंजना गुण और ध्वन्यात्मक गुण से संयुक्त हो गये हैं।

4.1.4 प्रतीकात्मकता -

भारत जी ने 'अग्नि-लीक' में प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

---

1. अग्रवाल भारतभूषण, 'अग्नि-लीक',पृ.25
2. वही, पृ.41

प्रतीकों के प्रयोग में कवि कल्पना का विशेष महत्त्व होता है। ''प्रतीक में सूक्ष्म निर्देशन की शक्ति होती है। इतना ही नहीं प्रतीक के माध्यम से विस्तार-वक्तृता भी संक्षेप में धारण कर लेती है।''[1] इसप्रकार भारतभूषण के खण्डकाव्य में प्रतीकों का प्रयोग होने के कारण उनका काव्य सजीव प्रतीत होता है। ''काव्य में प्रतीक-प्रयोग से भाषा में एक नई अर्थवत्ता तथा नवीन शक्ति आ जाती है। काव्य में अवतरित होकर प्रतीक कई बार अलंकार का काम करते है। जो बात अभिद्यात्मक शैली में कही जाने पर सौन्दर्य को नष्ट कर देती है, वही प्रतीकों का बल पाकर काव्यात्मक सौंदर्य को द्विगुणित कर देती है। प्रतीक एक ओर भाव-संप्रेषण करते है दूसरी ओर भाषा का अलंकरण।''[2]

भारत जी ने पौराणिक प्रतीकों के माध्यम से 'अग्नि-लीक' की रचना की है। इसमें पौराणिक पात्र राम, सीता, लव-कुश को प्रतीक बनाकर 'अग्नि-लीक' की रचना की है। सीता को आधुनिक स्त्री की प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया है तो राम को एक राजनेता के रूप में प्रस्तुत किया है। राजपुरूष सत्तावर्ग का प्रतिनिधित्व करता है तो रथवान प्रजा का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। लव-कुश को प्रतीक बनाकर माँ-बाप से दूर हुए बच्चों के भाव को व्यंजित किया है।

सीता आधुनिक संघर्षशील स्त्री के बोध को वाणी दे रही है। वह संघर्षशील स्त्री का प्रतीक है। राम राजनेता का प्रतीक है। 'अग्नि-लीक' की भाषा में नये, पुराने और किंचित परिवर्तित प्रतीको के प्रयोग से प्रतीकात्मकता आ गई है। 'अग्नि-लीक' की यह महान उपलब्धि है, जिसका विवेचन प्रतीक विधान के अंतर्गत किया गया है। प्रतीकों के साथ ही 'अग्नि-लीक' में जो बिम्बात्मकता आई है, वह भी उसकी समृध्दि की परिचायिका है।

'अग्नि-लीक' की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है -

''आज मेरी आँखों पर से झूठ का परदा उठ गया है;
मुझे निर्मम सत्य दिखायी देने लग गया है।
राम ने तो मुझे बहुत पहले छोड दिया था
आज मैं भी राम को छोडती हूँ।
अब मैं स्वतन्त्र हूँ, मुक्त हूँ,
अपने आप में पूर्ण हूँ,

1. डॉ.शर्मा हरिचरण, नयी कविता का मूल्यांकन : परम्परा और प्रगति की भूमिका पर,पृ.247
2. वही, पृ.251

आप अपनी निर्देशिका, आप अपनी कर्त्री, और
आप अपनी भोक्ता हूँ।''[1]

× × × × × × × × ×

'' पर राजकीय कार्यों पर,
राजनीतिक गतिविधि पर
ये सदा पैनी दृष्टि रखते हैं,
अपने बाहुबल को बड़ी सूक्ष्मता से बढ़ाते हैं,
अपनी शक्ति और प्रभुता के आस्कालन में
इन्होंने कभी ढील नहीं दिखायी।''[2]

प्रस्तुत पंक्तियाँ राम के बारे में कहीं गयी है जो एक राजनेता के रूप में सामने आती हैं। पौराणिक पात्र राम आज के राजनेता का प्रतीक है। कहने की जरूरत ही नहीं पडती कि 'अग्नि-लीक' की भाषा प्रतीकात्मक है। क्योंकि खण्डकाव्य पढ़ते समय यह महसूस होता है कि इसमें प्रतीकात्मकता अधिक है। भारत जी ने अपनी मनोनुकूल अभिव्यक्ति करके अपनी बात इमानदारी से व्यक्त कर दी है। इसमें भारत जी सफल होते हुए नजर आते हैं।

4.1.5 भाषा की विशालता -

'अग्नि-लीक' की भाषा में विशालता का गुण कूट-कूटकर भरा है। थोडे से शब्दों में बहुत बड़ा अर्थ छिपा होता है जिसमें भाषा की विशालता दिखाई देती है। भाषा की विशालता के कारण भावों की अभिव्यक्ति होती है जैसे 'अग्नि-लीक' की ये पंक्तियाँ -

1) ''मेरा दुख यही है
कि मैं राम की प्रजा हूँ।''[3]

---

1. अग्रवाल भारतभूषण, अग्नि-लीक, पृ.55
2. वही, पृ.53
3. वही, पृ.15

2) "कुछ दुःख ऐसे भी होते हैं।
जिन्हें आदमी सिर्फ भोगता है -
वह उन्हें रचता नहीं,चाहता भी नहीं,
और उन्हें मिटाना भी उसके बस में नहीं होता
क्योंकि जो बीत चुका है
वह अन-बीता कैसे हो सकता है?"[1]

3) " आज्ञा शिरोधार्य है।"[2]

4) "घर से छूटी नारी के जीवन में
ऐसा क्या हो सकता है जो जानने योग्य हो
और जाना न जा चुका हो।"[3]

5) "हाय, वह पुरूष नारी के प्यार को क्या समझेगा
जिसके पिता ने तीन-तीन ब्याह रचाये हों।"[4]

6) "इस संसार में नारी कितनी अकेली है !
उसका दुःख भी आँसू है,
उसका क्रोध भी।"[5]

सचमुच इन पंक्तियों में कितना गहरा अर्थ छिपा है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने भावों की गरिमा व्यंजित की है।

4.1.6 पौरूष और ओजगुण से ओतप्रोत भाषा -

'अग्नि-लीक' की भाषा में बड़ा ओज और पौरूषता दिखाई देती है। खण्डकाव्य पढते समय पाठक के चित्त में वीरता का आवेश उत्पन्न होता है। कौशिकी द्वारा किया गया सैन्य यात्रा का वर्णन मन में आवेश उत्पन्न कर देता है। जैसे -

---

1. अग्रवाल भारतभूषण, अग्नि-लीक, पृ.13
2. वही, पृ.17
3. वही, पृ. 25
4. वही, पृ.49
5. वही, पृ.44

1) " अहा, कितना दिव्य अश्व है !
सारे मंगल-चिन्हों से युक्त, हिम-धवल और उर्जस्वित
सोने के उसके साज पर जब सूरज की किरणें पड़ती हैं
तो कैसा झलमलाता है !"[1]

2) "बस कुछ न पुछो,
इतने स्वस्थ, इतने तरूण, उमंगों में तैरते -
शौर्य उनके ललाटों पर तिलक की तरह जगमगाता है !
धन्य हैं हमारे महाराज
जिनका ऐसा अतुल प्रताप है
धन्य है हमारा भाग्य
जो ऐसे वीर, धर्म-प्रती, कीर्तिवान महाराज मिले हैं !
मेरे तो नेत्र सफल हो गये ।"[2]

'अग्नि-लीक' में पौरूषता का भी गुण है। राजपुरूष और राम के कथन में पौरूषता दिखाई देती है। जैसे -

1) "जीवन तो पौरूष का नाम है -
सुख और दुःख - दोनों हमारी ही रचना है।"[3]

2) "चलो, तुम्हारा विचार होगा?"[4]

3) "तुम्हें अग्नि को साक्षी बनाकर वचन देना होगा
कि तुम पवित्र हो।"[5]

भाषा में जो शक्ति और वेग है वह भारत जी के खण्डकाव्य की अपनी विशेषता है। सत्य तो यह है कि भारत जी की भाषा पाठकों को विचार करने पर मजबूर कर देती है क्योंकि भाषा में कही पर आवेग है तो कही पर कोमलता।

1. अग्रवाल भारतभूषण, अग्नि-लीक,पृ.27-28
2. वही,पृ.28
3. वही,पृ.13
4. वही, पृ.43
5. वही, पृ.51

4.1.7 भावानुकूल भाषा -

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य की भाषा की प्रमुख विशेषता है कि कवि ने भावों के अनुरूप अपने विचारों को बाँधा है। कहीं उसमें ओजस्विता है कहीं कोमलता तो कहीं पर कठोरता है। 'अग्नि-लीक' की भाषा में विरोधात्मकता भी बहुत है। राजपुरूष के कथन में ओजस्विता है। रथवान की भाषा में कोमलता भी है और दुःख भी। राम के शब्दों में कठोरता भी है और करूणा भी। सीता के कथन में तो कोमलता, क्रोध, विद्रोह, दुःख, करूणा सारे गुण मिलते हैं। सीता का मोहभंग जनित आवेग उष्मारहित एवं मन्थर है -

"आज मेरी आँखों पर से झूठ का पर्दा उठ गया है।
मुझे निर्मम सत्य दिखायी देने लग गया है।
राम ने तो मुझे बहुत पहले ही छोड दिया था।
आज मैं भी राम को छोड़ती हूँ।
अब मैं स्वतंत्र हूँ, मुक्त हूँ
अपने आप में पूर्ण हूँ
आप अपनी निर्देशिका -
आप अपनी कर्ता और आप अपनी भोक्ता हूँ।"[1]

भावों के अनुसार भाषा बदलती हुई दिखाई देती है। 'अग्नि-लीक' की भाषा मिश्रित भाषा है। रथवान के कथनों से भाषा का रूप मर्मस्पर्शी सहज और स्वाभाविक लगती है।

ऐसा प्रतित होता है भारत जी का भाषा पर पूर्ण अधिकार हो, इसीकारण उन्होंने अपने गहन भावों और विचारों को सामर्थ्य के साथ प्रकट किया है। उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति सहज सुलभता के साथ की है। कहीं भी उसका रूप अस्पष्ट नहीं है। कवि ने कही भी भाषा को गठने का, सजाने का प्रयत्न नहीं किया है।

4.1.8 गद्यात्मक भाषा -

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य है किन्तु इसमें काव्यात्मकता कम और

1. अग्रवाल भारतभूषण, 'अग्नि-लीक',पृ.55

गद्यात्मकता ही अधिक दिखाई देती है। ऐसा लगता है कि भारत जी ने गद्य के टूकड़ों को ही तराशकर, काटछाटकर उसे काव्य का आकार दिया है। इसी के कारण भाषा में कोमलता आयी है किन्तु उसमें आद्यन्त एक ठण्डापन जारी है। भाषा में आवेग या क्षिप्रता नहीं है। इसमें ऐसा कोई मनोविकार नहीं है जो बिना सोचें समझे कुछ भी कर डालने में प्रवृत्त करे। भाषा में कोई चंचलता या जल्दबाजी भी नहीं दिखाई देती। खण्डकाव्य पढ़ते समय ऐसा लगता है कि कोई आसान, सरल कहानी ही पढ़ रहे हो। इसीलिए इसकी भाषा गद्य के अति निकट लगती है।

4.1.9 संवादात्मक भाषा -

'अग्नि-लीक' की भाषा संवादात्मक है। इसे नाट्यकाव्य भी कहा गया है। पूरा खण्डकाव्य संवादों से ही भरा है। इसमें कुल तीन दृश्य है, जो संवादों से ही भरे है। पहले दृश्य में राजपुरूष और रथवान के बीच की वार्ता को लिया गया है। दुसरे दृश्य में कौशिकी और देवी सीता है। इसी दृश्य में आगे एक आदिवासी पात्र 'चरण' और सीता के संवाद को लिया है। तिसरे दृश्य में वाल्मीकि और सीता के बीच का संवाद है। फिर राम और वाल्मीकि के बीच की बातचीत भी है। इसी दृश्य में लव-कुश और वाल्मीकि भी है। पूरा खण्डकाव्य संवादात्मक ही है।

4.1.10 प्रश्नात्मक भाषा -

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य प्रश्नात्मक भाषा से भरा हुआ है। ऐसा लगता है कि पूरा खण्डकाव्य प्रश्नों से भरा है। बहुत से प्रश्न सीता ने वाल्मीकि से पूछे हैं। बहुत से प्रश्न राम ने वाल्मीकि से पुछे हैं। राम और सीता दोनों भी अपनी समस्या को वाल्मीकि के सामने रखते है। कुछ प्रश्न कौशिकी ने भी सीता से पुछे है। रथवान और राजपुरूष के बीच भी प्रश्नात्मक भाषा दिखाई देती है।

ऐसा महसूस होता है कि इतने सारे प्रश्न भारत जी ने पाठकों के सामने रखे हैं जिसका सही उत्तर कवि पाठकों से ही चाहते हो। शायद कवि यह चाहते है कि इन तमाम प्रश्नों के उत्तर पाकर पाठक स्वयं अपनी समस्याओं का निवारण करे और परिस्थिति में सुधार लाए। गलत रूढी परंपरा को त्यागकर आधुनिक युग में नये तरीके से जीवन बिताए। नारी की समस्या को समझे तथा उसे स्वतंत्र और मुक्त करें।

4.1.11 मुहावरों का प्रयोग -

भाषा को प्रौढ़ता प्रदान करने में मुहावरों का विशेष महत्त्व होता है। ये सीधी और सरल उक्तियाँ हृदय को स्पर्श करती हैं। इससे भाषा में निखार के साथ भाव भी दमकने लगे है। सबसे बड़ी बात यह है कि अभीप्सित भाव की प्रेषणीयता में मुहावरे सबसे अधिक सहायक होते हैं। भारत जी ने 'अग्नि-लीक' में कई जगहों पर मुहावरों का भी प्रयोग किया है जैसे - ताबडतोब, कलेजे पर पत्थर रखना, पूरे दिन चढना, पाँव भारी होना, वे दिन लद गये, अंधेरे में रखना, प्राणों का पत्थर होना, कान बजाना, आँख गड़ाना, आँख मिचौनी खेलना आदि मुहावरें 'अग्नि-लीक' में निखार पैदा करती है। भारत जी ने इन मुहावरों का प्रयोग करके भाषा में प्रभावात्मकता लाने कि कोशिश की है।

4.1.12 पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग -

'अग्नि-लीक' खण्डकाव्य में भारत जी ने पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है। स्वयं पर बीती सारी बातें सीता याद करके रोती है। उस बीती घटना को वाल्मीकि से कहती है तथा राम पर ढेर सारे आरोप भी लगाती है। 'अग्नि-लीक' की कथा पौराणिक है तथा पौराणिक पात्रों को मानवीय रूप देकर उनके अंतर्विरोध एवं मानसिक उद्वेलन को भारत जी ने नयी भाषा में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष -

कोई भी कवि अपनी रचनात्मक क्षमता को भाषा के द्वारा और सशक्त बनाता है। भारतभूषण अग्रवाल कविता में अनुभूति और शिल्प को अलग नहीं मानते। उन्होंने शिल्प के स्तर पर अनेक प्रयोग किए हैं। भाषा के अंतर्गत भी उन्होंने अनेक प्रयोग किए हैं।

'अग्नि-लीक' के संवादों की भाषा चुस्त-दुरूस्त, वेगपूर्ण और सुस्पष्ट सरल है। 'अग्नि-लीक' की भाषा मिश्रित है। भाषा में 'कथ्य' की गहराई तथा चरित्रों का विकास करने की क्षमता देखी जा सकती है। भाषा में सांकेतिकता,प्रौढ़ता, सरलता, विषयानुकूलता, भावानुकूलता, प्रेषणीयता, प्रतीकात्मकता, प्रवाहशीलता, भाषा की विशालता, संवादात्मकता, प्रश्नात्मकता, मुहावरों का प्रयोग तथा पूर्वदीप्ति शैली आदि

सभी गुण विद्यमान है। अभिव्यक्ति और व्यंजनात्मकता से काव्यभाषा में अभूत पूर्व गहनता आयी है। मंच के नये रूपबध्द और नेपथ्यगत ध्वनियोजना के साथ प्रकाश क्रम के द्वारा दृश्य परिवर्तन की शैली समाविष्ट हुई है। यह काव्य भाषा जैसे (सीता और वाल्मीकि के संवाद शैली वाले दृश्यों में) अधिक व्यंजनापूर्ण होकर निकरी और संवरी है। वास्तव में यह खण्डकाव्य आदर्श संवाद-योजना का सुष्ट निर्देशन कहा जा सकता है। भारत जी ने भावों की अभिव्यक्ति के लिए व्याकरणिक चिन्हों का प्रयोग कर भाषा को अधिक संवेदनशील और प्रभावकारी बनाया है। भारत जी की भाषा पात्रानुकूल और भावानुकूल रही है। भाषा की अर्थवत्ता की दृष्टि से वह सर्वत्र आक्रोश और करूणा से भरी है। मुहावरों का प्रयोग भी सार्थक हुआ है। कुल मिलाकर भाषा सौंदर्य की दृष्टि से यह रचना सहज और सरल सुस्पष्ट फलदायी हैं। भारत जी को इसमें पूर्ण सफलता मिली हैं।